एम.ए. हिंदी (एम.एच.डी.)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी.–04

नाटक एवं अन्य गद्य विधाएं

सत्रीय कार्य (जुलाई–2023 – जनवरी, 2024) सत्र के लिए

जुलाई–2023 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 30 अप्रैल, 2024

जनवरी–2024 सत्र के लिए अंतिम तिथि : 31 अक्तूबर, 2024

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068

सत्रीय कार्य 2023–24
(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : एम.एच.डी–4
सत्रीय कार्य कोड : एम.एच.डी–4/टी.एम.ए/2023–24
कुल अंक–100

(1) निम्नलिखित अवतरणों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 10x4=40

(क) चूरन सभी महाजन खाते।
जिससे जमा हजम कर जाते।।
चूरन खाते लाला लोग।
जिसकी अकिल अजीरन रोग।।
चूरन खावैं एडिटर जात।
जिनके पेट पचै नहिं बात।।
चूरन साहेब लोग जो खाता।
सारा हिंद हजम कर जाता।।
चूरन पुलिस वाले खाते।
सब कानून हजम कर जाते।।

(ख) कई–कई दिनों के लिए अपने को उससे काट लेती हूँ। पर धीरे–धीरे हर चीज फिर उसी ढर्रे पर लौट आती है। सब–कुछ फिर उसी तरह होने लगता है जब तक कि हम ..... जब तक कि हम नए सिरे से उसी खोह में नहीं पहुँच जाते। मैं यहाँ आती हूँ ..... यहाँ आती हूँ तो सिर्फ इसीलिए कि .....

(ग) लोहा बड़ा कठोर होता है। कभी–कभी वह लोहे को भी काट डालता है। उहूँ भाई! मैं तो मिट्टी हूँ – मिट्टी जिसमें से सब निकलते हैं। मेरी समझ में तो मेरे शरीर की धातु मिट्टी है, जो किसी के लोभ की सामग्री नहीं, और वास्तव में उसी के लिए सब धातु अस्त्र बनकर चलते हैं, लड़ते हैं, जलते हैं, टूटते हैं, फिर मिट्टी हो जाते हैं। इसलिए मुझे मिट्टी समझो–धूल समझो।

(घ) यह आत्महत्या होगी प्रतिध्वनि
इस पूरी संस्कृति में
दर्शन में, धर्म में, कलाओं में
शासन–व्यवस्था में
आत्मघात होगा बस अंतिम लक्ष्य मानव का

(2) 'अंधायुग' के चरित्रों की प्रतीकात्मकता का उल्लेख करते हुए नाटक में वर्णित मूल्य संघर्ष की प्रासंगिकता बताइए। 10

(3) 'लोभ और प्रीति' निबंध के भावों का विवेचन करते हुए शुक्लजी की मनोभाव संबंधी अवधारणाओं पर अपना मत प्रस्तुत कीजिए। 10

(4) ''हिन्दी जीवनी साहित्य में 'कलम का सिपाही' एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए। 10

(5) 'अदम्य जीवन' की विषयवस्तु के प्रति लेखकीय दृष्टिकोण का सोदाहरण विश्लेषण कीजिए। 10

(6) निम्नलिखित विषयों पर टिप्पणी लिखिए: 5x4=20

(क) 'तांबे के कीडे' की प्रतीक योजना
(ख) साक्षात्कार और 'ऑक्टेवियो पॉज'
(ग) 'धोखा' निबंध का प्रतिपाद्य
(घ) 'ठकुरी बाबा' की चारित्रिक विशेषताएं